जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

कोटा

Rashtradoot

फोनः- 2386031, 2386032 फैक्सः- 0744-2386033 वर्षः 47 संख्याः 124 प्रभात कोटा, बुधवार 16 फरवरी, 2022 कोटा/24/2012-14 पृष्ठ 8 मूल्य 1.20 रु.

वैस्टर्न ऑस्ट्रेलिया का पैनग्विन आइलैण्ड, जहां पैनग्विन की विशिष्ट प्रजाति, लिटिल पैनग्विन मिलती हैं, में 3.3 मिलियन डॉलर का डिस्कवरी सैंटर बनाने की योजना है। संरक्षणविदों का कहना है कि इस निर्माण से इस संकटग्रस्त पक्षी की बस्ती को और भारी खतरा पैदा हो जाएगा। राज्य की नई पर्यावरण मंत्री रीस विटबी ने हाल ही में इस सैंटर का कॉन्सैप्ट डिज़ाइन जारी किया, जिसके तहत मौजूदा सैंटर को तोड़कर 50 मीटर दूर नया सैंटर बनाया जाएगा, जिसमें ऊंचा मंच होगा और फव्वारे लगाए जाएंगे। पर्यावरण मंत्री के अनुसार नए सैंटर की मदद से, आइलैण्ड एवं सिटी ऑफ रॉकिघंम, लिटिल पैनग्विन की बेहतर देखभाल करने में अधिक सक्षम होंगे और सुरक्षित रूप से इंसान भी इन अनोखे जीवों को देख पाएंगे। निर्माण कार्य वर्ष 2023 में गर्मी के दो महीनों में होगा। गौरतलब है कि गर्मी में द्वीप बंद कर दिया जाता है। लेकिन संरक्षणविदों का कहना है कि, यह योजना ध्यान भटकाने के लिए है, बेहतर यह होगा कि इस द्वीप को अकेला छोड़ दिया। इस द्वीप पर लिटिल पैनग्विन घटती आबादी से पीड़ित हैं, इसके अलावा, गत प्रजननकाल बहुत खराब था, सन् 2021 में जितने चूजे जन्मे उनमें से आधे मर गए जो उनकी कुल आबादी का दस प्रतिशत था। इस द्वीप की पैनग्विन आनुवंशिक रुप से अलग समझी जाती हैं। यद्यपि वैज्ञानिक जांच में अभी इसकी पुष्टि नहीं हुई है। ये पैनग्विन पहले से ही जलवायु परिवर्तन से जूझ रही हैं और इंसानी गतिविधियों ने इनकी मुश्किलें और बढ़ा दी हैं। वैज्ञानिकों ने सरकार के प्रस्ताव पर नाराजगी जताई है। मरडॉक युनिवर्सिटी के डॉ. जो फॉन्टेन ने कहा कि, ऊंचा मंच बनाने और फव्वारे लगाने का प्रस्ताव छलावा है, क्योंकि इस पैनग्विन कॉलोनी के लिए द्वीप में घोंसला बनाने के स्थान की समस्या नहीं है। ये लोग बार बार जलवायु परिवर्तन के बहाने की आड़ ले रहे हैं, पर यह नहीं मान रहे कि, इंसान की गतिविधियां इस क्षेत्र को प्रभावित कर रही हैं, बेहतर होगा इस क्षेत्र को अकेला छोड़ दिया जाए।'' उन्होंने कहा, ''पैनग्विन के प्रजनन केन्द्रों पर इंसानी आवाजाही इन पक्षियों को परेशान कर सकती है। ये पक्षी ऐसी जगहों पर ही घोंसला बनाते हैं, जो इंसानी पहुंच से दूर हों।'' उन्होंने बताया कि गर्मी के मौसम में जब वयस्क पैनग्विन ''निर्मोचन'' की प्रक्रिया में होते हैं, तब वो गहरे पानी में नहीं तैर सकते, इसलिए समुद्र किनारे के उथले पानी में डुबकी लगाते हैं। परंतु यदि बड़ी संख्या में आसपास लोग मौजूद होंगे तो पैनग्विन नहीं आएंगी और कुछ पैनग्विन गर्मी से मर भी सकती हैं।

राहुल गांधी व सचिन पायलट की गोवा एयरपोर्ट पर संयोगवश मुलाकात

पर संयोगवश मुलाकात, गोवा व राजस्थान की राजनीतिक स्थिति पर लम्बे व विस्तृत मंथन में परिवर्तित हुई

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 फरवरी। यह मुलाकात संयोग से हो गई थी। लेकिन इसने एक राजनैतिक विचार-विमर्श का रूप ले लिया।

हुआ यह कि राहुल गांधी गोवा से विदा ले रहे थे और सचिन पायलट अपना प्रचार अभियान करने गोवा पहुँच रहे थे। दोनों गोवा हवाई अड्डे पर मिल गये तथा दोनों में पाँचों राज्यों के विधानसभा चुनावों के बारे में लम्बी एवं विस्तृत राजनैतिक चर्चा हुई, जिनमें से कुछ राज्यों में तो कांग्रेस, भाजपा से जमकर संघर्ष कर रही हैं।

समझा जाता है कि चर्चा में राजस्थान का जिक्र भी आ गया, जहाँ अभी केवल आधी राजनैतिक नियुक्तियाँ ही हुई हैं क्योंकि शेष नियुक्तियों पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत कुंडली मार के बैठे हुये हैं।

सचिन पायलट का विचार यह रहा है कि राजस्थान के अगले विधानसभा चुनावों में अब दो साल से भी कम समय रहा है तथा अब समय आ गया है कि ये काम जल्दी कर लिये जायें तथा राजनैतिक निर्णय लेने में शीघ्रता की जाये, जिनसे उन बहुत से पार्टी कार्यकर्ताओं का भला हो, जो समायोजित होने के लिये लम्बे समय से प्रतीक्षा कर रहे हैं।

मजेदार बात यह है कि अजय माकन भी पार्टी के प्रचार के सिलसिले में उस समय गोवा में ही थे। समझा जाता है कि माकन और पायलट की भेंट तो नहीं हुई लेकिन इन दोनों में फोन पर बातचीत जरूर हुई तथा बातचीत उन्हीं निष्कर्षों के इर्द-गिर्द रही, जो राहुल गांधी और सचिन पायलट की भेंट के दौरान हुई चर्चा में निकले थे।

समझा जाता है कि पंजाब, उत्तराखंड तथा गोवा में पार्टी की चुनावी संभावनाओं को लेकर, राहुल गांधी काफी आशान्वित हैं। उन्हें आशा है कि इन राज्यों में, कांग्रेस सरकार बनाने की दिशा में बढ़ सकती है। लेकिन समझा जाता है कि उत्तर प्रदेश में कांग्रेस की स्थिति को लेकर, राहुल गांधी ज्यादा आशान्वित नहीं हैं, जहाँ मुख्य टक्कर भाजपा एवं समाजवादी पार्टी के नेतृत्व वाले गठबंधन के बीच है।

सचिन पायलट गोवा पहुँचने से पहले, शेष चार राज्यों में आक्रामक रूप से प्रचार तथा राज्य-दर-राज्य तूफानी दौरा करते आ रहे हैं।

- प्राप्त जानकारी के अनुसार, यह भी बात हुई कि, अब राजस्थान विधानसभा चुनाव में लगभग दो साल ही बाकी हैं, अतः मु.मंत्री द्वारा राजनीतिक नियुक्तियों की आधी सूची जारी करना उचित नहीं, क्योंकि अगर पार्टी के और कार्यकर्ताओं को राजनीतिक पद का लाभ मिलता, वे और उत्साह से राजनीतिक गतिविधि व चुनाव की तैयारी में जुड़ते।
- अजय माकन भी इस मंथन के दौरान गोवा में मौजूद थे तथा पायलट ने राहुल गांधी से हुई बातचीत के सारांश से माकन को फोन द्वारा वाकिफ कराया गया।
- राहुल गांधी पंजाब, उत्तराखण्ड व गोवा में पार्टी की सरकार बनने के बारे में आशान्वित हैं तथा यू.पी.में मुख्य संघर्ष भाजपा व सपा के बीच में है तथा कांग्रेस को ज्यादा आशा नहीं।
- सचिन पायलट ने इन चारों राज्यों में सघन प्रचार अभियान चलाया है।

'एक समय आता है, जब हद हो जाती है और आप आगे बर्दाश्त नहीं कर सकते'

इन शब्दों के साथ पंजाब के पूर्व मु.मंत्री अमरिन्दर सिंह के पुराने नजदीकी अश्विनी कुमार ने कांग्रेस छोड़ी

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 फरवरी। 20 फरवरी को होने वाले पंजाब विधानसभा चुनाव से मात्र 5 दिन पहले राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिन्दर सिंह के निष्ठावान तथा प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह सरकार में विधि मंत्री रहे अश्विनी कुमार ने आज कांग्रेस छोड़ दी। उन्होंने कहा कि ''एक समय ऐसा भी आ जाता है, जब आप और अधिक नहीं सहन नहीं कर सकते हैं।''

अश्विनी कुमार कभी मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह के खेमे में थे तथा वे उस समय भी उनके साथ खड़े रहे थे, जब अर्जुन सिंह ने पूर्व प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव के खिलाफ विद्रोह किया था।

अश्विनी ने भविष्यवाणी की कि उन्हें ऐसा लग रहा है कि कांग्रेस ''निकट भविष्य'' में गर्त में चली जायेगी।

अश्विनी कुमार, जो पेशे से वकील हैं, काफी समय से स्वयं को उपेक्षित महसूस कर रहे थे क्योंकि उन्हें न तो राहुल गांधी कोई महत्व दे रहे थे और न प्रियंका गांधी। इसलिये उन्होंने अपने इस्तीफे की घोषणा के लिये विधानसभा चुनावों का समय तय किया ताकि मतदान पर प्रभाव पड़ सके।

यद्यपि, उन्होंने जोर देकर यह बात कही है कि वे इस समय भाजपा में शामिल नहीं हो रहे हैं लेकिन उनके निकटवर्ती सूत्रों का कहना है कि वे 10 मार्च को घोषित होने वाले विधानसभा चुनाव परिणामों का इंतजार कर रहे हैं। उसके बाद, वे या तो कैप्टन अमरिन्दर सिंह की पार्टी में चले जायेंगे या भाजपा में शामिल हो जायेंगे।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस राष्ट्र के मूड को नहीं पहचान रही है। उन्होंने राहुल गांधी का नाम लिये बिना कहा कि पार्टी द्वारा प्रोजेक्ट किये जा रहे नेता लोगों को स्वीकार्य नहीं हैं।

69 वर्षीय अश्विनी कुमार ने कहा, ''यह प्रश्न बार-बार पूछा जाता है कि अगर लोग प्रधानमंत्री से खुश नहीं हैं तो फिर कांग्रेस को चुनकर सत्ता में क्यों

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- पर, अश्विनी कुमार का, पार्टी से इस्तीफा देने का कारण शायद था कि, पिछले कुछ समय से न तो राहुल गांधी और न ही प्रियंका गांधी से उन्हें खास तवज्जो मिल रही थी।
- हालांकि, उन्होंने भाजपा से जुड़ने की संभावना से इंकार किया, पर चर्चा है कि, वे पंजाब के चुनाव खत्म होने का इंतजार कर रहे हैं और फिर या तो अमरिन्दर की पार्टी से जुड़ेंगे या भाजपा में शामिल होंगे।
- यह भी माना जा रहा कि, भाजपा के मीडिया मैनेजरों ने गृह मंत्री अमित शाह के नेतृत्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, अश्विनी कुमार के इस्तीफा देने में, जिससे कांग्रेस के खिलाफ कुछ वातावरण बने।

राजधानी दिल्ली के अफसर!

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 फरवरी। सर्वोच्च न्यायालय ने इस बावत सुनवाई के लिये 3 मार्च की तारीख दे दी कि राजधानी के नौकरशाह किसके नियंत्रण में होने चाहिये। यह एक ऐसा मुद्दा है जिस पर केन्द्र और दिल्ली सरकार में लम्बे समय से टकराव चल रहा है।

वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने यह प्रकरण त्वरित सुनवाई के लिये मुख्य न्यायाधीश एन.वी. रमना की अध्यक्षता वाली बैंच के समक्ष दिल्ली सरकार की ओर से रखा तथा यथा सम्भव शीघ्र सुनवाई, मार्च के शुरू में ही, करने का अनुरोध किया।

उन्होंने कहा कि यह प्रकरण राजधानी की सरकार और प्रशासन से संबंधित कानून के एक महत्वपूर्ण पहलू

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- अभिषेक मनु सिंघवी ने सुप्रीम कोर्ट में यह सवाल उठाया कि, इन अफसरों पर किसका नियंत्रण होना चाहिये, दिल्ली सरकार का या केन्द्रीय सरकार का।

यह रहस्यमय ''बाबा'' कौन है, जिसने नैशनल स्टॉक एक्सचेंज में चार खरब डॉलर का स्कैम किया

एन.एस.ई. की प्रबंध निदेशिका, चित्रा रामकृष्णा पूर्णतया ''बाबा'' के इशारों पर काम कर रही थीं

- जाल खंबाता -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 15 फरवरी। कांग्रेस ने मंगलवार को सेबी (सिक्योरिटीज एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया) को शुक्रवार के इस जबरदस्त रहस्योद्घाटन को हाथों हाथ लपक लिया कि हिमालय में रहने वाला कोई रहस्यमय ''बाबा'' भारत के सबसे बड़े स्टॉक एक्सचेंज, द नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) को संचालित कर रहा है। यह संचालन वह एनएसई के मैनेजिंग डायरेक्टर तथा सी ई ओ चित्रा रामकृष्णा के जरिये कर रहा था, जिसे दिसंबर 2016 में बर्खास्त कर दिया गया था।

यह बाबा, जो इमेल के जरिये संदेशों का आदान-प्रदान करता था, एन एस ई के प्रमुख प्रबंधकीय अधिकारी की नियुक्ति कर रहा था तथा चित्रा रामकृष्णा को आदेश दे रहा था कि करीब 4 ट्रिलियन (303 लाख करोड़ रु. के कुल बाजारी पूंजीकरण (मार्केट केपिटलाइजेशन) वाले इस स्टॉक एक्सचेंज को कैसे संचालित किया जाये। ज्ञातव्य है कि यह पूंजी 5 ट्रिलियन की उस अर्थव्यवस्था से मात्र 1 ट्रिलियन ही कम है, जिसका वादा प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्र से किया था।

सेबी को पता चला कि चित्रा रामकृष्णा को 2016 में कैसे हटाया गया था। दरअसल, को-लोकेशन, व्यापार घोटाले, अधिकार के दुरुपयोग तथा पूर्ण सुरक्षित स्थिति में एन एस ई के संचालन में सत्ता के दुरुपयोग में चित्रा रामकृष्णा की प्रमुख भूमिका थी। यही नहीं, वरिष्ठ प्रबंधकों तथा प्रमोटरों, जिनमें बड़े सरकारी संस्थान तथा विभिन्न बैंक भी शामिल थे, ने कभी भी इस पर आपत्ति नहीं उठाई, रामकृष्णा का विरोध नहीं किया। कांग्रेस प्रवक्ता प्रो. गौरव वल्लभ ने कहा कि जब रामकृष्णा ने एन एस ई छोड़ा, तो उसे जेल में डालने के बजाय, वेतन तथा अन्य बकाया राशि के रूप में, उसे पद से हटाते समय 44 करोड़ रु. और दिये गये।

गौरव वल्लभ ने कहा कि रामकृष्णा के अलावा किसी को नहीं मालूम कि यह बाबा या योगी आखिर कौन है। रामकृष्णा दावे के साथ कहती है कि बाबा को ''आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त है तथा वह स्वयं को कहीं भी, डहां भी वह चाहे, प्रकट कर सकता है तथा उसका कोई

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- ये बाबा गत दशकों से प्रबंध निदेशक चित्रा रामकृष्णा को ''गाइड'' कर रहे थे, स्टॉक एक्सचेंज के चलाने में तथा न सेबी न वित्त मंत्रालय या सरकार की किसी एजेंसी ने कोई आपत्ति की।

'युवा राजनीति में आयें'

-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 फरवरी। पूर्व विदेश मंत्री कुंवर नटवर सिंह जिनका सारी जिंदगी विदेश नीति से संबंधित मुद्दों से ही सरोकार रहा है, पहले तो आई.एफ.एस. (इण्डियन फॉरेन सर्विस के अधिकारी) के रूप में बाद में विदेश मंत्री के रूप में और वे गांधी परिवार के भी बेहद करीबी रहे हैं, ने युवाओं से राजनीति में आने की अपील की ताकि गलत लोगों को राजनीति से दूर रखा जा सके, उन्होंने युवाओं से कहा कि उन्हें निचले स्तर से काम करना चाहिए। दिल्ली के एक ऑर्थोपैडिक डॉक्टर मयंक दराल, जो कि ''डिकोडिंग इलैक्शन्स''

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- पूर्व विदेश मंत्री ने अपनी नयी पुस्तक ''वन लाइफ इज़ नॉट इनफ'' के रिलीज़ होने की पूर्व संध्या पर, एक इन्टरव्यू में कहा।

यूक्रेन संकट अन्ततोगत्वा धीरे-धीरे खत्म हो रहा है

रूस ने यूक्रेन सीमा से अपनी सेना हटाना शुरू किया

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 फरवरी। यूक्रेन के साथ लगती अपनी पूर्वी सीमा पर से अपने सैनिकों की शनैः शनैः वापसी की रूस की घोषणा कूटनीति का एक मास्टर स्ट्रोक हैं।

रूस के रक्षा मंत्री ने बुधवार को घोषणा की कि यूक्रेन की सीमा के पास मोर्चा लेकर बैठी रूसी सेना के कई घटकों ने अपना मिशन पूर्ण कर लिया है तथा उसे वापस भेजा जा रहा है।

यह खबर मिलते ही विश्व के फायनैंशियल मार्केट्स में उछाल आ गया और तेल की कीमतों में सुधार हुआ, इस उम्मीद के साथ कि यूक्रेन संकट अब अंततः थम जाएगा।

महत्वपूर्ण बात यह है कि यह घोषणा तब की जब रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन जर्मनी के नए चांसलर ओलाफ शौल्ज़ की मॉस्को में जोर-शोर से मेहमानबाजी कर रहे थे।

रूस के कूटनीतिज्ञों द्वारा जर्मन चांसलर की खातिरदारी, यू.के. के विदेश मंत्री के साथ किए गए द्वेषपूर्ण व्यवहार से सर्वथा विपरीत है। यहां तक कि फ्रांस के राष्ट्रपति को भी इतनी तवज्जो नहीं दी गई थी।

रूस के दौरे पर आए ब्रिटेन के विदेश मंत्री की रूस के विदेश मंत्री के साथ हुई एक संयुक्त प्रैस कांफ्रैंस में मेजबान मंत्री यह टिप्पणी कर एकाएक वहां से चले गए कि संवाद ''एक गूंगे और एक बहरे'' के बीच है। दौरे पर आए गणमान्य अतिथि को फिर आलोचना झेलने के लिए अकेला छोड़ दिया गया।

यूरोप की इस चरम चुनौती के बीच कूटनीतिक वार्ताओं में जर्मनी को महत्व देना मॉस्को की धमकी के विरूद्ध यूरोपीय यूनियन में पश्चिमी देशों की एकजुटता भंग करने का एक स्पष्ट प्रयास है।

एक सप्ताह पूर्व ही जब फ्रांस के राष्ट्रपति एमानुएल मैक्रॉन अपनी स्वयं की पहल पर ही तनाव समाप्त करने के लिए मॉस्को दौरे पर थे, तब उनके साथ हुई एक संयुक्त प्रैस कांफ्रैंस में पुतिन आवेश में आ गए थे। उन्होंने मिन्स्क समझौते की पालना को लेकर यूक्रेन और खासतौर पर उनके राष्ट्रपति के विरूद्ध अभद्र भाषा का प्रयोग किया था।

चूंकि, फ्रांस अगले छह माह के प्रति यूरोपीय यूनियन (ई.यू.) का प्रैसिडैन्ट है, इसलिए वहां की पूर्वी सीमा पर शांति स्थापित करने की उसकी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- पर, रूस की सेना की वापसी की ''टाइमिंग'' बहुत ही सटीक रही। जब जर्मनी के चांसलर रूस में तनाव घटाने के लिये आयोजित सद्भावना यात्रा पर थे, तब रूस ने सेना हटाने का निर्णय लेने के संकेत दिये। इससे पूर्व जब ब्रिटेन के विदेश मंत्री व फ्रांस के राष्ट्रपति रूस गये थे, सेना की सीमा से वापसी की बात करने, रूस ने उन्हें तिरस्कृत करके वापस भेजा था।
- रूस के, ब्रिटेन व फ्रांस के प्रतिनिधियों के साथ रूखे व्यवहार का कारण शायद यह था कि, रूस महसूस कर रहा था कि, यूक्रेन का घाव पूरी तरह से पका नहीं था, उस समय।
- जब रूस के सैन्य बल का रूतबा पूरी तरह से सबके सामने आ गया, तभी रूस ने सेना हटाने का निर्णय लिया।
- रूस चाहता था, यूरोप उसके सैन्य बल से भयभीत रहे और रूस की सीमा पर स्थित छोटे-छोटे राष्ट्रों को नाटो से जोड़ने के प्रयास न करे।
- रूस की ओर से इस यूक्रेन संकट का मकसद था, विश्व को जता देना कि, रूस को ''हल्के तरीके'' से लेना ठीक नहीं। रूस अपना मकसद हासिल करने में सफल रहा।

''सैक्युलर''

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 फरवरी। भारत के पूर्व विदेश मंत्री के. नटवर सिंह (93) ने कहा है कि उन्होंने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल हुए अपने पुत्र को इसके लिए प्रेरित नहीं किया था, लेकिन उनके स्वयं के भाजपा में शामिल होने का कोई प्रश्न नहीं है, क्योंकि ''हमारे जीवन मूल्य अलग हैं।''

उनके यहां जोरबाग स्थित आवास पर इस माह की शुरूआत में डॉ. मयंक दराल द्वारा लिए गए एक साक्षात्कार में नटवर सिंह ने कहा कि वह एक अच्छे हिन्दू हैं किन्तु उस हिन्दुत्व के प्रति उत्साहित नहीं है, जिस पर भाजपा अमल करती है और यही मूलभूत विभेद है।

उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी पर भी कटाक्ष किया कि उन्होंने पिछले सात

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- नटवर सिंह ने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया कि, गत साल में प्र.मंत्री ने एक बार भी इस शब्द का इस्तेमाल नहीं किया।